MOHANDAS KARAMCHAND GANDHI
UG-SEM-V, CC:11

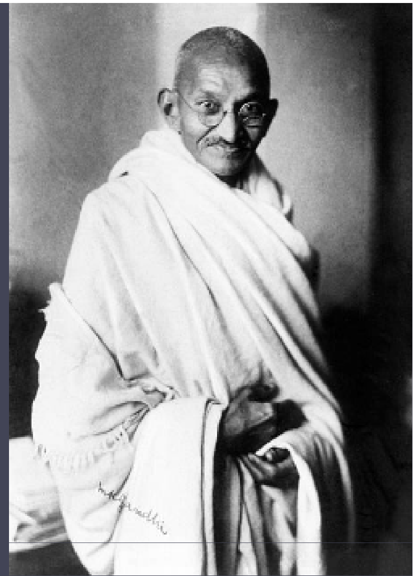

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

जीवन परिचय

मोहनदास करमचन्द गाँधी जी का **जन्म 2 अक्टूबर 1869 में कठियाबाड़ा के पोरबन्दर** नाम स्थान पर हुआ।गाँधी जी की प्रारम्भिक शिक्षा **5 वर्श की आयु में गुजरात के हिन्दी स्कूल में हुई।** तत्पश्चात् 10 वर्श की आयु में उन्हें अंग्रेजी स्कूल में प्रवेश मिला। 13 वर्श की आयु में बिना किसी वैयक्तिक सहमति के **उनका विवाह 1883 में कस्तूरबाबाई से हुआ।** 17 वर्श की अवस्था में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर गाँधी जी ने अपने विद्यार्थी जीवन के उच्चतम आदर्शों का परिचय दिया। **4 सितम्बर 1882 को गाँधी जी ने बैरस्ट्री पास करने के लिए विलायत (इंग्लैंड) प्रस्थान किया** और उसके बाद बैरस्ट्री पूर्ण कर वे भारत लौटे। **16 वर्श की छोटी सी उम्र में पिता का साया उठ जाने के पशत् भी** गाँधी जी ने देश–विदेश में अपना अध्ययन जारी रखा। **मात्र 22 वर्श के थे, बैरिस्ट्री पास कर इसी वर्श से मुम्बई के कठियावाड के वकालत शुरू की।** जहाँ निवासित एक व्यापारी दक्षिण अफ्रिका में व्यापार करते थे। उन्होंने अपने मुकदमे की पैरवी के लिए **1893 में गाँधी जी को दक्षिण अफ्रिका भेजा।**

- लगभग **20 वर्शों तक अफ्रिका में रहकर अहिंसात्मक सत्याग्रह** के आन्दोलन का सर्वप्रथम प्रयोग किया, इस सारी प्रक्रिया में उन्हें **7 दिन व चौदह दिन का दो बार उपवास** रखना पड़ा और दो बार जेल भी जाना पड़ा। **सन् 1915 में देश के नेता के रूप में भारत लौटे।** भारत में अंग्रेजी सरकार की नीति के खिलाफ, सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया और देशवासियों को देश की स्वतंत्रता के लिए संगठित करने का शक्तिशाली अभियान प्रारम्भ किया। विदेशी सामाग्री का बहिश्कार, अंग्रेजी कानूनों का विरोध राश्ट्रहित के लिए उपवास एवं अनशन जेल यात्राएँ कर देश की आजादी उनके जीवन का लक्ष्य बन गयी, और **1920 में उनका सक्रिय राजनैतिक जीवन प्रारम्भ हो गया।** असहयोग आन्दोलन, स्वतंत्रता, स्वाधीनता एवं भारतीयों में नवजीवन संचार करने के लिए चर्खा, खादी का प्रचार किया। **'यंग इण्डिया तथा 'नवजीवन' पत्रों का सम्पादन, हरिजन संघ की स्थापना** कर गतिविधियों में वृद्धि की।

- 1942 में भारत छोड़ा का नारा बुलंद कर अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराने की दृढ इच्छा से 15 अगस्त 1947 में देश की आजादी में अहम् भूमिका का निर्वाह् किया, लेकिन स्वतंत्र भारत में गाँधी जी अधिक सांस न ले सके और **30 जनवरी 1948 ई0 को नाथूराम गोडसे द्वारा उनकी हत्या कर दी गयी।** गाँधी जी के जीवन का अध्ययन करने से स्पश्ट होता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन आन्दोलनों से भरा पड़ा या ये कहा जाए कि उनका जीवन अत्याचार के विरुद्ध आन्दोलनों का इतिहास रहा है।

गाँधी जी के नीति–सिद्धान्त

- सत्य (Truth)
- अहिंसा (Non violence)

गाँधी जी के अहिंसा का सद्वान्त

- सत्य प्राप्ति गांधी जी का लक्ष्य व अहिंसा उनके लिए साधन था, वे अहिंसा को जीवन की सबसे बड़ी शक्ति मानते थे, जो जीवन को हिंसा से मुक्त रखती हैं। उनके अनुसार अहिंसा के बिना सत्य की खोज व ईश्वर प्राप्ति का स्वप्न अधूरा है। गाँधी जी के अनुसार–अहिंसा कायरता का अस्त्र नहीं है, बल्कि व्यक्ति की सबलता का सशक्त प्रतीक है। अहिंसा कायर का कवच नहीं, बल्कि बहादुर का उच्चतम गुण है। किसी भी व्यक्ति के लिए कुविचार रखना ही हिंसा है।'
- 'सामान्य रूप से अहिंसा को **सकारात्मक (Positive)** एवं **नकारात्मक (Negative)** दो रूपों में देखा जाता है। गाँधी नकारात्मक रूप से पृथक है और सकारात्मक अहिंसा को अपनाते हुए उसके गुणों को बिजली से अधिक तेज और ईश्वर से भी अधिकशक्तिशाली रूप में वर्णित करता है। अतः ऊँची से ऊँची हिंसा का विरोध ऊँची से ऊँची अहिंसा के द्वारा किया जा सकता है।

अहिंसा के तत्व
(Essential Elements of Non violence)

- गाँधी जी द्वारा प्रस्तुत अहिंसा के सिद्धान्त के आधार पर अहिंसा के आवश्यक तत्वों की चर्चा निम्नवत् की जायेगी–
- **सत्य (Truth)-** सत्य अहिंसा का पहला आवश्यक व महत्वपूर्ण तत्व है जो स्वयं में ब्रह्म है। परमात्मा है, ईश्वर है, जिसकी प्राप्ति मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य है।
- **प्रेम (love)-** सभी जीवधारियों के साथ प्रेम की भावना व व्यवहार की आवश्यकता को गाँधी जी महत्वपूर्ण मानते थे, प्रेम जिसमें सत्य का होना नितान्त आवश्यक है। सबसे बड़ी अहिंसा है। गाँधी जी ने लिखा है–**"प्रेम कभी कोई चीज पाने का इच्छुक नहीं होता। वह सदा कुछ देता है। यह सदा मुसीबतें सहन करता है। कभी घृणा नहीं करता, कभी बदला नहीं लेता।"**

- **आन्तिरिक पवित्रता (inner purity)-** अंतरात्मा की भाुद्धता एवं पवित्रता अहिंसा का तीसरा तत्व हैं। जहाँ आन्तरिक पवित्रता के अन्तर्गत आत्मा–अनुशासन, नम्रता जैसे गुणों को सम्मिलित किया जाता है, क्योंकि इसी के आधार पर व्यक्ति स्वयं को अहिंसा के लिए प्रेरित करता है। **डॉ0 सुशील नायर ने लिखा है–**''आन्तरिक पवित्रता व चट्टान है जिस पर एक सत्याग्रही को खड़ा होना चाहिए, ताकि वह अपने शत्रु के हदय को प्रभावित कर सके और उनके अन्दर निहित मानवीय तथा ईश्वरीय शक्ति चिंगारी को प्रज्जवलित कर सके।''
- **लगन (persevernance)-** अहिंसा के लिए लगन का होना नितान्त आव यक है। गाँधी जी मानते थे कि व्यक्ति को किसी भी कार्य को केवल सफलता की लालसा से नहीं करना चाहिए, क्योंकि सफलता का मार्ग प्रशस्त करने पर कई बार असफलता का सामना करना पड़ता है, ऐसी स्थिति में अटूट लगन ही सफलता प्राप्ति की अनिवार्यता है।

- **भयहीनता (Fearlessness)-** अहिंसा को एक सक्रिय शक्ति के रूप में स्वीकार करते हुए गाँधी जी मानते थे कि अहिंसा एक सतत् क्रियाशीलता शक्ति है, जिसमें सत्यता का पालन करने के लिए निडरता या भयहीनता का गुण होना आवश्यक है। अहिंसा बहादुरों का अस्त्र है, कायरता से अहिंसा में वजह पाना असंभव है।
- **लालच का न होना (Non Plssession)-** गाँधी जी के अहिंसा के प्रमुख तत्वों में व्यक्ति का लालची प्रवृति से दूर रहना भी एक है। लालच जहाँ व्यक्ति के आत्मविश्वास को क्षीण करता है, वहीं अपराधिक प्रवृत्ति को जन्म देकर व्यक्ति को पदभ्रश्ट भी कर देता है।
- **व्रत (fasting)-** गाँधी जी के अनुसार व्रत केवल व्यक्ति में नियम व अनुशासन को संचालित नहीं करता, बल्कि शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक पवित्रता का विकास करता है, और जिनमें इस प्रकार की पवित्रता निहित होती है। वह अहिंसा के सिद्धान्त का आसानी से पालन करने में सक्षम होता है।

गांधी जी के अहिंसा के सिद्धान्त को निश्कर्शतः निम्नवत् समझा जायेगा

- अहिंसा के लिए आत्मबल की भाक्ति आवश्यक है।
- अहिंसा आन्तिरिक भाक्ति के रूप में प्रयुक्त होकर आत्मा को विकसित करती है।
- अहिंसा मानव जीवन का उच्चतम आदर्श है, जिसको प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को निरन्तर प्रयत्नशील होना चाहिए।
- अहिंसा के लिए सत्य, प्रेम आन्तरिक पवित्रता, लगन, निडरता, लालची प्रवृत्ति का न होना तथा व्रत के आधार पर भाारीरिक, मानसिक व आत्मिक पवित्रता को विकसित करना आवश्यक है।
- अहिंसा बुद्धि को नहीं हृदय को पवित्र करती है।
- अहिंसा जीवन का एक नियम है।